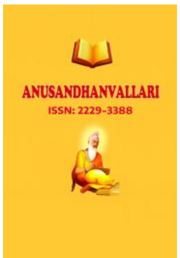

Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा एवं शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा पर आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण के प्रभाव का अध्ययन (रायपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों के विशेष संदर्भ में)

[1]सपना देवांगन, [2]प्रो. डॉ. लुभावनी त्रिपाठी

[1]शोध छात्रा, शिक्षा विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

[2]प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, कलिंगा विश्वविद्यालय, रायपुर (छत्तीसगढ़)

सार

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा एवं शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा पर सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी (आईसीटी) के प्रति दृष्टिकोण के प्रभाव का अध्ययन करना है। यह अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले के दस मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा नौ के आठ सौ विद्यार्थियों (चार सौ बालक एवं चार सौ बालिकाएँ) पर आधारित है। वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि का उपयोग करते हुए तीन मानकीकृत मापनियों के माध्यम से आँकड़ों का संकलन किया गया। टी-परीक्षण के माध्यम से परिकल्पनाओं का परीक्षण किया गया। अध्ययन के परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि उच्च आईसीटी दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा (माध्य = 172.30) निम्न आईसीटी दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों (माध्य = 158.50) की तुलना में सांख्यिकीय रूप से सार्थक रूप से अधिक पाई गई (टी = 4.25, पी = 0.001)। इसी प्रकार उच्च आईसीटी दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा (माध्य = 29.10) भी निम्न दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों (माध्य = 24.50) की तुलना में सार्थक रूप से उच्च पाई गई (टी = 3.95, पी = 0.002)। इस अध्ययन के निष्कर्ष शैक्षणिक संस्थानों में आईसीटी के प्रभावी एवं व्यापक उपयोग की आवश्यकता को बल प्रदान करते हैं।

मुख्य शब्द: आत्म-अवधारणा, शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा, सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, आईसीटी दृष्टिकोण, माध्यमिक विद्यालय विद्यार्थी, डिजिटल शिक्षा।

1. प्रस्तावना

वर्तमान समय में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास ने मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। शिक्षा के क्षेत्र में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का समावेश इसी परिवर्तन का एक महत्वपूर्ण आयाम है। आधुनिक शैक्षिक परिदृश्य में आईसीटी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को अधिक प्रभावी, संवादात्मक तथा विद्यार्थी-केंद्रित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। डिजिटल प्रौद्योगिकी के माध्यम से विद्यार्थी विभिन्न स्रोतों से ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं, जटिल अवधारणाओं को सहजता से समझ सकते हैं तथा अपने अधिगम अनुभवों को अधिक समृद्ध बना सकते हैं।

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान का हस्तांतरण नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व का विकास करना भी है। इस संदर्भ में आत्म-अवधारणा और शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा दो ऐसे महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक आयाम हैं जो विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता एवं व्यक्तित्व विकास को गहराई से प्रभावित करते हैं। आत्म-अवधारणा व्यक्ति की स्वयं के प्रति वह समग्र धारणा है जिसमें उसका आत्मविश्वास, आत्मसम्मान तथा अपनी क्षमताओं के प्रति विश्वास सम्मिलित होता है। जिन विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा सकारात्मक होती है वे अपने अध्ययन में अधिक रुचि, उत्साह तथा दृढ़ता प्रदर्शित करते हैं।

शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा वह आंतरिक मनोवैज्ञानिक शक्ति है जो विद्यार्थियों को अपने शैक्षणिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहने के लिए प्रेरित करती है। माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण चरण है। इस अवस्था में किशोरावस्था के संक्रमण काल में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के आधारभूत आयाम विकसित होते हैं। यदि इस समय विद्यार्थियों में सकारात्मक आत्म-अवधारणा एवं सुदृढ़ उपलब्धि प्रेरणा का विकास होता है, तो यह उनके भावी जीवन के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होता है।

भारत में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा में प्रौद्योगिकी के समावेश पर विशेष बल दिया है। डिजिटल शिक्षा को सुलभ, समावेशी एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। ऐसे परिवेश में यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि आईसीटी के प्रति विद्यार्थियों का दृष्टिकोण उनके मनोवैज्ञानिक विकास को किस प्रकार प्रभावित करता है। यही कारण है कि प्रस्तुत शोध में इस विषय का व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक अध्ययन किया गया है।

2. संबंधित साहित्य की समीक्षा

मार्श एवं शेवेल्सन (1985) ने अपने अध्ययन में आत्म-अवधारणा की बहुआयामी संरचना को प्रतिपादित करते हुए बताया कि शैक्षणिक आत्म-अवधारणा और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य गहरा सकारात्मक संबंध होता है। बेन्डुरा (1997) ने आत्म-प्रभावकारिता के सिद्धांत में प्रमाणित किया कि जिन व्यक्तियों में स्वयं की क्षमताओं के प्रति दृढ़ विश्वास होता है, वे कठिन लक्ष्यों को भी प्राप्त करने में सक्षम होते हैं।

एटकिन्सन (1964) ने उपलब्धि प्रेरणा के अपने सिद्धांत में बताया कि उच्च उपलब्धि प्रेरणा वाले व्यक्ति कठिनाइयों को चुनौती के रूप में स्वीकार करते हैं तथा सफलता प्राप्त करने की तीव्र आकांक्षा रखते हैं। मैकक्लेलैण्ड (1961) ने भी प्रमाणित किया कि उपलब्धि प्रेरणा व्यक्ति के व्यवहार, परिश्रम एवं शैक्षणिक प्रदर्शन को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

सेलविन (2011) ने अपने अध्ययन में बताया कि विद्यार्थियों का तकनीकी साधनों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उनके अधिगम की गुणवत्ता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। टियो (2011) ने प्रमाणित किया कि जो विद्यार्थी आईसीटी को उपयोगी एवं सुलभ मानते हैं, वे इसका अधिक प्रभावी उपयोग करते हैं।

शर्मा एवं वर्मा (2018) ने माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर किए गए अध्ययन में पाया कि आईसीटी का उपयोग विद्यार्थियों के आत्मविश्वास एवं आत्म-प्रभावकारिता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। गुप्ता एवं अग्रवाल (2019) ने अपने अध्ययन में प्रमाणित किया कि डिजिटल साधनों का नियमित उपयोग विद्यार्थियों में अध्ययन के प्रति रुचि एवं प्रेरणा को बढ़ाता है।

पटेल (2020) ने रायपुर जिले के विद्यालयों में किए गए अध्ययन में पाया कि आईसीटी-समृद्ध शिक्षण वातावरण में विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि एवं प्रेरणा में उल्लेखनीय वृद्धि होती है। तिवारी एवं मिश्रा (2021) ने अपने शोध में यह प्रमाणित किया कि सूचना प्रौद्योगिकी के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति विद्यार्थियों की सामाजिक एवं शैक्षणिक आत्म-अवधारणा को विकसित करने में सहायक होती है।

वेंकटेश एवं सहयोगी (2003) ने प्रौद्योगिकी स्वीकृति के संदर्भ में सिद्ध किया कि उपयोगकर्ता का दृष्टिकोण एवं धारणा प्रौद्योगिकी के प्रभावी उपयोग में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कारक है। सिंह (2022) ने मध्य भारत के विद्यालयों में किए गए अध्ययन में पाया कि डिजिटल शिक्षण से विद्यार्थियों की स्वायत्त अधिगम प्रवृत्ति और उपलब्धि प्रेरणा में वृद्धि होती है।

3. शोध अंतराल

संबंधित साहित्य की समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि आत्म-अवधारणा, उपलब्धि प्रेरणा एवं आईसीटी से संबंधित अलग-अलग अध्ययन विभिन्न संदर्भों में किए गए हैं। तथापि निम्नलिखित शोध अंतराल प्रमुख रूप से परिलक्षित होते हैं:

प्रथमतः, माध्यमिक विद्यालय स्तर पर आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण का एक साथ आत्म-अवधारणा एवं शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा दोनों पर प्रभाव का अध्ययन करने वाले शोध छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले के संदर्भ में अत्यंत सीमित हैं। द्वितीयतः, अधिकांश उपलब्ध अध्ययन महानगरीय क्षेत्रों तक सीमित हैं। रायपुर जैसे क्षेत्रीय शहर के शहरी एवं ग्रामीण विद्यालयों को सम्मिलित करने वाला समग्र अध्ययन उपलब्ध नहीं है। तृतीयतः, बालक एवं बालिकाओं के मध्य आईसीटी दृष्टिकोण के भिन्न प्रभावों का तुलनात्मक विश्लेषण इस क्षेत्र में नहीं किया गया है। प्रस्तुत शोध इन्हीं अंतरालों की पूर्ति करने का प्रयास करता है।

4. शोध पद्धति

4.1 शोध के उद्देश्य

उद्देश्य 1: माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति दृष्टिकोण का उनकी आत्म-अवधारणा पर प्रभाव का अध्ययन करना।

उद्देश्य 2: माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति दृष्टिकोण का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा पर प्रभाव का अध्ययन करना।

4.2 शून्य परिकल्पनाएँ

शून्य परिकल्पना 1: माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण का उनकी आत्म-अवधारणा पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

शून्य परिकल्पना 2: माध्यमिक विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण का उनकी शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा पर कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया जाएगा।

4.3 शोध विधि

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध विधि का उपयोग किया गया है। इस विधि के माध्यम से अध्ययनाधीन चरों की वर्तमान स्थिति एवं उनके पारस्परिक संबंधों का व्यवस्थित एवं तथ्यात्मक विश्लेषण किया गया है।

4.4 जनसंख्या एवं प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध की जनसंख्या छत्तीसगढ़ राज्य के रायपुर जिले के मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों में शैक्षणिक सत्र 2024-25 में कक्षा नौ में अध्ययनरत कुल 14,860 विद्यार्थी हैं (स्रोत: युनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इन्फॉर्मेशन सिस्टम, 2024-25)। उद्देश्यपूर्ण प्रतिचयन विधि के माध्यम से रायपुर जिले के दस मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया। प्रत्येक विद्यालय से 80 विद्यार्थियों (40 बालक एवं 40 बालिकाएँ) को प्रतिदर्श में सम्मिलित किया गया।

सारणी क्रमांक 1

प्रतिदर्श का संक्षिप्त विवरण

विद्यालयों की संख्या	बालक	बालिकाएँ	कुल विद्यार्थी
10	400	400	800

4.5 शोध उपकरण

(क) आत्म-अवधारणा मापनी: डॉ. आर. के. सारस्वत द्वारा निर्मित 48 कथनों वाली इस मापनी में शारीरिक, सामाजिक, स्वभावगत, शैक्षणिक, नैतिक एवं बौद्धिक – छह आयाम सम्मिलित हैं। समग्र विश्वसनीयता गुणांक 0.91 है।

(ख) शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा मापनी: डॉ. टी. आर. शर्मा द्वारा निर्मित 38 कथनों वाली इस मापनी की विश्वसनीयता 0.697 है।

(ग) आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण मापनी: डॉ. आशा शर्मा एवं डॉ. विकास कुमार त्रिपाठी द्वारा निर्मित 56 कथनों वाली इस मापनी की विश्वसनीयता 0.77 है।

4.6 आँकड़ा संकलन प्रक्रिया

शोधकर्ता द्वारा स्वयं चयनित विद्यालयों में जाकर विद्यालय प्रशासन की अनुमति प्राप्त की गई। विद्यार्थियों को शोध के उद्देश्य एवं उत्तरों की गोपनीयता के बारे में जानकारी दी गई। तीनों मापनियाँ एक ही बैठक में सामूहिक रूप से प्रशासित की गई। सभी 800 प्रश्नावलियाँ पूर्णतः भरी हुई एवं उपयोगी पाई गई।

4.7 सांख्यिकीय तकनीक

संकलित आँकड़ों के विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन एवं स्वतंत्र प्रतिदर्श टी-परीक्षण का उपयोग किया गया। उच्च एवं निम्न आईसीटी दृष्टिकोण के आधार पर विद्यार्थियों को दो समूहों में विभाजित कर टी-परीक्षण लागू किया गया। सभी परीक्षण 0.05 सार्थकता स्तर पर किए गए।

5. आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

5.1 उद्देश्य 1 के अनुसार विश्लेषण: आईसीटी दृष्टिकोण का आत्म-अवधारणा पर प्रभाव

विद्यार्थियों के आईसीटी दृष्टिकोण के प्राप्तांकों के आधार पर उन्हें उच्च (संख्या = 400) एवं निम्न (संख्या = 400) दो समूहों में विभाजित किया गया। दोनों समूहों की आत्म-अवधारणा के माध्य, मानक विचलन तथा टी-परीक्षण के परिणाम निम्न सारणी में प्रस्तुत हैं:

सारणी क्रमांक 2

आईसीटी दृष्टिकोण के आधार पर आत्म-अवधारणा का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-मूल्य	पी-मूल्य	परिणाम
उच्च आईसीटी दृष्टिकोण	400	172.30	17.20	4.25	0.001	सार्थक
निम्न आईसीटी दृष्टिकोण	400	158.50	18.10			

सार्थकता स्तर: 0.05

सारणी 2 के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि उच्च आईसीटी दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा का माध्य (172.30) निम्न आईसीटी दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों के माध्य (158.50) की तुलना में 13.80 अंक अधिक है। प्राप्त टी-मूल्य 4.25 है जो पी = 0.001 पर सार्थक है। चूँकि पी-मूल्य (0.001) निर्धारित सार्थकता स्तर (0.05) से कम है, अतः शून्य परिकल्पना 1 अस्वीकृत की जाती है।

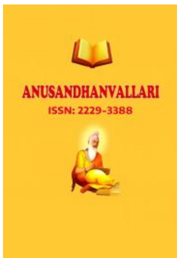

Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

आरेख क्रमांक 1

आईसीटी दृष्टिकोण के आधार पर आत्म-अवधारणा का माध्य (दण्ड आरेख)

अधिकतम मापनी मान: 240 अंक (आत्म-अवधारणा)

5.2 उद्देश्य 2 के अनुसार विश्लेषण: आईसीटी दृष्टिकोण का शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा पर प्रभाव

आईसीटी दृष्टिकोण के आधार पर निर्मित उच्च एवं निम्न दोनों समूहों की शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा के माध्य, मानक विचलन एवं टी-परीक्षण के परिणाम निम्न सारणी में प्रस्तुत हैं:

सारणी क्रमांक 3

आईसीटी दृष्टिकोण के आधार पर शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा का तुलनात्मक विश्लेषण

समूह	संख्या	माध्य	मानक विचलन	टी-मूल्य	पी-मूल्य	परिणाम
उच्च आईसीटी दृष्टिकोण	400	29.10	4.80	3.95	0.002	सार्थक
निम्न आईसीटी दृष्टिकोण	400	24.50	5.20			

सार्थकता स्तर: 0.05

सारणी 3 के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि उच्च आईसीटी दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा का माध्य (29.10) निम्न आईसीटी दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों के माध्य (24.50) की तुलना में 4.60 अंक अधिक है। प्राप्त टी-मूल्य 3.95 है जो पी = 0.002 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना 2 अस्वीकृत की जाती है।

आरेख क्रमांक 2

आईसीटी दृष्टिकोण के आधार पर शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा का माध्य (दण्ड आरेख)

अधिकतम मापनी मान: 38 अंक (उपलब्धि प्रेरणा)

5.3 आईसीटी दृष्टिकोण के स्तरानुसार वितरण

सारणी क्रमांक 4

विद्यार्थियों के आईसीटी दृष्टिकोण का स्तरानुसार वितरण (N = 800)

स्तर	विद्यार्थी संख्या	प्रतिशत
उच्च	180	22.50%
औसत से अधिक	320	40.00%
औसत	210	26.25%
औसत से कम	70	8.75%
निम्न	20	2.50%

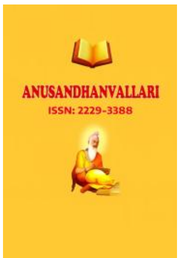

Anusandhanvallari
Vol 2024, No.1
December 2024
ISSN 2229-3388

आरेख क्रमांक 3

आईसीटी दृष्टिकोण का स्तरानुसार वितरण (दण्ड आरेख)

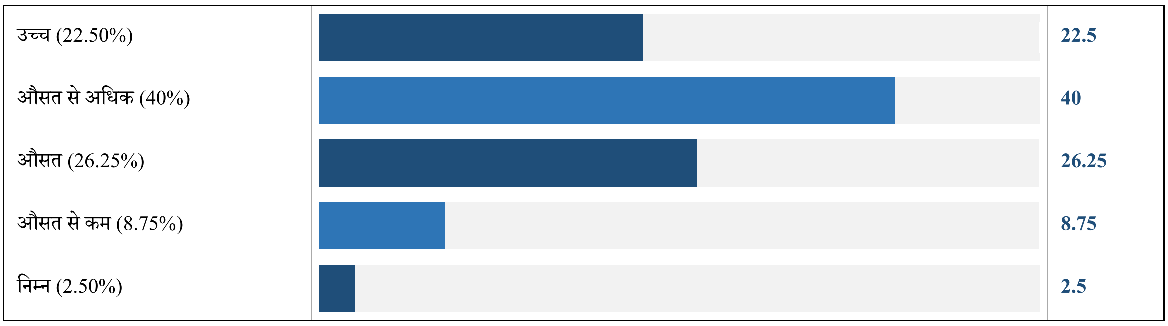

5.4 परिकल्पनाओं के परीक्षण का सारांश

सारणी क्रमांक 5

परिकल्पनाओं के परीक्षण का सारांश

परिकल्पना	टी-मूल्य	पी-मूल्य	सार्थकता	परिणाम
शून्य परिकल्पना 1 (आत्म-अवधारणा)	4.25	0.001	0.05 पर सार्थक	अस्वीकृत
शून्य परिकल्पना 2 (उपलब्धि प्रेरणा)	3.95	0.002	0.05 पर सार्थक	अस्वीकृत

6. परिणाम

परिणाम 1: उच्च आईसीटी दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा (माध्य = 172.30) निम्न आईसीटी दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों (माध्य = 158.50) की तुलना में सांख्यिकीय रूप से सार्थक रूप से अधिक पाई गई (टी = 4.25, पी = 0.001)। शून्य परिकल्पना 1 अस्वीकृत की जाती है।

परिणाम 2: उच्च आईसीटी दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा (माध्य = 29.10) निम्न दृष्टिकोण वाले विद्यार्थियों (माध्य = 24.50) की तुलना में सार्थक रूप से अधिक पाई गई (टी = 3.95, पी = 0.002)। शून्य परिकल्पना 2 अस्वीकृत की जाती है।

परिणाम 3: विद्यार्थियों का आईसीटी दृष्टिकोण सामान्यतः औसत से अधिक स्तर (माध्य = 78.50) का पाया गया, जो डिजिटल शैक्षिक परिवेश के प्रति विद्यार्थियों की सकारात्मक अनुकूलता को दर्शाता है।

परिणाम 4: विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा का औसत (165.40) एवं शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा का औसत (26.80) दोनों औसत से अधिक श्रेणी में पाए गए।

7. निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध के निष्कर्ष स्पष्ट रूप से यह प्रमाणित करते हैं कि माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति दृष्टिकोण उनकी आत्म-अवधारणा एवं शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा दोनों को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

जिन विद्यार्थियों में आईसीटी के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है, वे तकनीकी साधनों का उपयोग उत्साह एवं सक्रियता के साथ करते हैं। इस प्रक्रिया में विद्यार्थियों के आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता एवं अपनी क्षमताओं के प्रति विश्वास में वृद्धि होती है, जो उनकी आत्म-अवधारणा को सकारात्मक दिशा प्रदान करती है। साथ ही तकनीकी माध्यमों के रोचक अधिगम अनुभव विद्यार्थियों की अध्ययन में रुचि एवं लक्ष्य-उन्मुखता को सुदृढ़ करते हैं, जिससे उनकी शैक्षणिक उपलब्धि प्रेरणा में भी वृद्धि होती है।

इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि आईसीटी के प्रति दृष्टिकोण विद्यार्थियों के मनोवैज्ञानिक विकास का एक महत्वपूर्ण कारक है। यह निष्कर्ष आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में डिजिटल प्रौद्योगिकी के व्यापक एवं प्रभावी समावेश की आवश्यकता को बल प्रदान करता है।

8. शैक्षणिक निहितार्थ

प्रथमतः, विद्यालयों में आईसीटी आधारित शिक्षण की व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ एवं व्यापक बनाया जाना चाहिए। स्मार्ट बोर्ड, संगणक प्रयोगशाला, इंटरनेट सुविधा एवं डिजिटल शैक्षणिक सामग्री की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए ग्रामीण विद्यालयों में भी डिजिटल अवसंरचना का विकास किया जाना चाहिए।

द्वितीयतः, शिक्षकों को आईसीटी के प्रति विद्यार्थियों में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने के लिए विशेष रूप से प्रशिक्षित किया जाना चाहिए। शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में मनोवैज्ञानिक आयामों, विशेषतः आत्म-अवधारणा एवं उपलब्धि प्रेरणा के विकास में तकनीकी साधनों की भूमिका, पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए।

तृतीयतः, विद्यार्थियों की आत्म-अवधारणा को सुदृढ़ करने के लिए प्रौद्योगिकी-समृद्ध शैक्षिक वातावरण का निर्माण किया जाए। ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी, डिजिटल परियोजनाओं, आभासी प्रयोगशाला जैसी गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में आत्मनिर्भरता एवं आत्मविश्वास की भावना विकसित की जा सकती है।

चतुर्थतः, विद्यार्थियों की उपलब्धि प्रेरणा को बढ़ाने के लिए आईसीटी आधारित गेमीफिकेशन, प्रतिस्पर्धात्मक ऑनलाइन मूल्यांकन एवं व्यक्तिगत शिक्षण पथ जैसी विधियों का उपयोग किया जा सकता है।

पंचमतः, अभिभावकों को घर में बच्चों के लिए तकनीकी साधनों की उपलब्धता एवं उनके सकारात्मक उपयोग के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए।

9. संदर्भ सूची

[1] एटकिंसन, जे. डब्ल्यू. (1964). एन इंट्रोडक्शन टू मोटिवेशन। वैन नॉस्ट्रैंड।

[2] बंडूरा, ए. (1997). सेल्फ-एफिकेसी: द एक्सरसाइज़ ऑफ कंट्रोल। डब्ल्यू. एच. फ्रीमैन।

[3] गुप्ता, आर., एवं अग्रवाल, एस. (2019). आईसीटी और शैक्षिक उपलब्धि प्रेरणा: भारत के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों का एक अध्ययन। इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी, 5(2), 45–58।

[4] मार्श, एच. डब्ल्यू., एवं शेवल्सन, आर. जे. (1985). आत्म-अवधारणा: इसकी बहुआयामी एवं श्रेणीबद्ध संरचना। एजुकेशनल साइकोलॉजिस्ट, 20(3), 107–125। https://doi.org/10.1207/s15326985ep2003_1

[5] मैकक्लीलैंड, डी. सी. (1961). द अचीविंग सोसाइटी। वैन नॉस्ट्रैंड।

[6] शिक्षा मंत्रालय, भारत। (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। भारत सरकार।

[7] पटेल, आर. (2020). रायपुर जिले के माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर आईसीटी का प्रभाव। कालिंगा जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज़, 3(1), 22–35।

[8] सरस्वत, आर. के. (1984). सेल्फ-कॉन्सेप्ट क्वेश्चनेयर (एससीएस-आरकेएस)। नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन।

[9] सेल्विन, एन. (2011). एजुकेशन एंड टेक्नोलॉजी: की इश्यूज़ एंड डिबेट्स। कंटिन्यूअम इंटरनेशनल पब्लिशिंग ग्रुप।

[10] शर्मा, ए., एवं त्रिपाठी, वी. के. (2015). एटिट्यूड स्केल टुवर्ड्स आईसीटी इन स्कूल टीचिंग (एएसटीआईसीटीएस)। लेखक।

[11] शर्मा, ए., एवं वर्मा, पी. (2018). आत्म-अवधारणा और आईसीटी उपयोग: माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों पर एक अनुभवजन्य अध्ययन। जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, 43(3), 72–85।

[12] शर्मा, टी. आर. (2006). अकादमिक अचीवमेंट मोटिवेशन टेस्ट (एएएमटी-एसटी)। साइको सेंटर।

[13] सिंह, ए. (2022). मध्य भारत में डिजिटल अधिगम और शैक्षिक उपलब्धि प्रेरणा: एक तुलनात्मक अध्ययन। एजुकेशनल रिव्यू क्वार्टरली, 18(4), 101–115।

[14] टिओ, टी. (2011). प्रौद्योगिकी के उपयोग के प्रति शिक्षकों की अभिप्रेरणा को प्रभावित करने वाले कारक: मॉडल विकास और परीक्षण। कम्प्यूटर्स एंड एजुकेशन, 57(4), 2432–2440। https://doi.org/10.1016/j.compedu.2011.06.008

[15] तिवारी, एस., एवं मिश्रा, ए. (2021). माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की आईसीटी के प्रति अभिवृत्ति एवं आत्म-अवधारणा: एक संबंधात्मक अध्ययन। जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी एंड इनोवेशन, 7(1), 18–30।

[16] यू-डाइस+ (2024–25). यूनिफाइड डिस्ट्रिक्ट इन्फॉर्मेशन सिस्टम फॉर एजुकेशन प्लस। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार। https://udiseplus.gov.in

[17] वेंकटेश, वी., मॉरिस, एम. जी., डेविस, जी. बी., एवं डेविस, एफ. डी. (2003). सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग की स्वीकृति: एक एकीकृत दृष्टिकोण की ओर। एमआईएस क्वार्टरली, 27(3), 425–478। https://doi.org/10.2307/30036540